डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 16.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 27)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"पावक रूपी नाम है, सब घट रहा समाय।
चित चकमक लागै नहीं, धूआँ ह्वै ह्वै जाय।।"

प्रस्तुत पद्यावतरण ज्ञानमार्गी निर्गुण धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीर द्वारा रचित है। यह साखी हमारी पाठ्यपुस्तक 'कबीर वचनावली' में 'नाम' शीर्षक के अंतर्गत संकलित है।

प्रस्तुत साखी में संतकवि कबीर का कहना है कि परमात्मा का नाम अर्थात राम पावक रूपी है, जो घट-घट में उसी प्रकार समाया हुआ है जिस प्रकार रुई में अग्नि समायी रहती है, परन्तु हमारा चकमक रूपी चित्त उसमें लगता नहीं है, अर्थात् यदि कोई चकमक पत्थर सूर्य की किरणों को पूंजीभूत नहीं कर पाता है तो अग्नि नहीं प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार हमारा चित्त भी ईश्वर-प्रेम को पूंजीभूत नहीं कर पाता है जिससे कि काया की माया अर्थात् वासना रूपी रूई जल नहीं रही है और धुआँ-धुआँ होकर ही रह जाती है।

यहाँ कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे अग्नि तो सर्वव्याप्त है, परन्तु किसी वस्तु से उसे प्रकट करने के लिए जिस प्रकार चकमक पत्थर का उपयोग सहायक होता है, अर्थात् जैसे चकमक पत्थर सूर्य की किरणों को ही पूंजीभूत कर अग्नि को उत्पन्न कर डालता है, वैसे ही प्रत्येक हृदय में व्याप्त परमात्मा चित्त की एकाग्रता से ही जाना जाने योग्य है। अर्थात् चकमक पत्थर की तरह जब हमारा चित्त ज्ञान की किरणों को पूंजीभूत कर दे और समस्त वाह्य उपादानों उपराम हो जाए, हट जाए, तो परमात्मतत्व का बोध सहज में हो सकता है, क्योंकि वे तो स्वतः प्रत्येक हृदय में व्याप्त हैं। परंतु, जब तक

ऐसा नहीं हो पाता, जब तक चित्त में यह एकाग्रता नहीं आ पाती, तब तक ज्योति के बदले धुआँ ही दिखाई पड़ता है, वासना की कालिमा ही छिटककर सामने आ जाती है। भाव स्पष्ट है कि चित्तवृत्तियाँ प्रभु में केंद्रित होने पर ही उनका साक्षात्कार संभव है, अर्थात् एक निष्ठता ही साक्षात्कार का एकमात्र अवलंबन है।